साधुवृत्ति समाचरेत्

साधुवृत्तिं समाचरेत्
(श्रेष्ठ आचरण करना चाहिए)

1. ***अस्ति कर्मपुरनाम्नि नगरे प्रच्छन्नभाग्य-नामधेयः कश्चित् कुमारः। बाल्ये वयसि विद्यापराङ्मुखः स केनचित् दुष्टबुद्धिनाम्ना चौरेण सह चौर्यकर्मणि निरतः सञ्जातः। एकदा स दुष्टबुद्धिना सार्धं कस्यचित् श्रेष्ठिनः गेहे धनहरणार्थं ग्रामान्तरं प्रस्थितः।***

हिंदी अनुवाद (Hindi Translation)

कर्मपुर नामक नगर में प्रच्छन्नभाग्य नामक कोई कुमार रहता था। बाल्यावस्था में विद्या से विमुख रहने वाला वह (प्रच्छन्नभाग्य) किसी दुष्टबुद्धि नामक चोर के साथ चोरी के काम में संलग्न हो गया। एक बार वह दुष्टबुद्धि के साथ किसी सेठ के घर में धन चुराने के लिए दूसरे गाँव में चल पड़ा।

शब्दार्थाः (Word-meanings Sanskrit to Sanskrit, Hindi and English)

निरतः–संलग्नः, लगा हुआ (Indulged)। **विद्यापराङ्मुखः**–विद्याविमुखः, विद्या के प्रति रुचि न रखने वाला (One who hates education)। **सार्धम्**–सह, साथ (With)। **गेहे**–गृहे, घर में (In the house)।

समासाः (Compounds)

प्रच्छन्नभाग्यः	–	प्रच्छन्नः भाग्यः यस्य सः (बहुव्रीहिः)।
चौर्यकर्मणि	–	चौर्यं कर्मणि (कर्मधारयः)।
धनहरणार्थम्	–	धनस्य हरणं, तस्य अर्थम् (षष्ठी तत्पुरुषः)।
ग्रामान्तरम्	–	ग्रामस्य अन्तरम् (षष्ठी तत्पुरुषः)।
विद्यापराङ्मुखः	–	विद्यायाः पराङ्मुखः यः सः (बहुव्रीहिः)।
दुष्टबुद्धिना	–	दुष्टा बुद्धिः यस्य सः, तेन (बहुव्रीहिः)।

सन्धि-विच्छेदः (Disjoin Sandhi)

कश्चित्	–	कः	+	चित् (विसर्ग सन्धिः)।
पराङ्मुखः	–	पराम्	+	मुखः (परसवर्ण सन्धिः)।
ग्रामान्तरम्	–	ग्राम	+	अन्तरम् (दीर्घ सन्धिः)।
धनहरणार्थम्	–	धनहरण	+	अर्थम् (दीर्घ सन्धिः)।

प्रत्ययाः (Suffixes)

सञ्जातः	–	सम् + जन् + क्त।
श्रेष्ठिनः	–	श्रेष्ठ + इन्।
प्रस्थितः	–	प्र + स्था + क्त।

प्रश्ना: (Questions)

(I) एकपदेन उत्तरत–

(*i*) कुमारस्य नाम किम् आसीत्? (*ii*) दुष्टबुद्धिना किमर्थं ग्रामान्तरं प्रस्थित:?

(II) पूर्णवाक्येन उत्तरत–

(*i*) क: कुत्र च निरत: सञ्जात:?

(*ii*) तौ कुत्र प्रस्थितौ?

(III) भाषिककार्यम्–

(*i*) 'एकस्मिन् समये' इति अर्थे अत्र किम् अव्ययपदं प्रयुक्तम्?

(क) विरत: (ख) एकदा (ग) सार्धम् (घ) केनचित्

(*ii*) 'सञ्जात:' इति पदे का मूलधातु:?

(क) जन् (ख) जा (ग) ज्ञा (घ) जात्

(*iii*) 'शैशवावस्थायाम्' इति अर्थे के पदे प्रयुक्ते?

(क) चौर्यकर्मणि (ख) वयसि (ग) बाल्ये (घ) बाल्ये वयसि

(*iv*) 'बाल्ये वयसि' इति अनयो: पदयो: विशेषणपदं किम्?

(क) वचसि (ख) वय: (ग) बाल्ये (घ) बाल्य:

(*v*) 'श्रेष्ठिन:' इति पदे क: प्रत्यय:?

(क) इन् (ख) इन: (ग) णिन: (घ) णिच्

उत्तराणि– (I) (*i*) प्रच्छन्नभाग्य:। (*ii*) धनहरणार्थम्।

(II) (*i*) प्रच्छन्नभाग्य: दुष्टबुद्धिनाम्ना चौरेण सह चौर्य-कर्मणि निरत: सञ्जात:। (*ii*) तौ कस्यचित् श्रेष्ठिन: गेहे ग्रामान्तरं प्रस्थितौ।

(III) (*i*) (ख) एकदा (*ii*) (क) जन् (*iii*) (घ) बाल्ये वयसि (*iv*) (ग) बाल्ये (*v*) (क) इन्।

प्रश्ननिर्माणम्– (*i*) स: **श्रेष्ठिन:** गृहे धनहरणार्थं प्रस्थित:। (*ii*) कुमारस्य **नाम** प्रच्छन्नभाग्य: आसीत्।
(*iii*) **कर्मपुरनगरे** एक: कुमार: अवसत्। (*iv*) तस्य मित्रम् एक: **चौर:** आसीत्।

उत्तराणि–(*i*) कस्य (*ii*) किम् (*iii*) कुत्र (*iv*) क:।

2. *अथ व्रजन्तौ तौ गर्तसंकुले मार्गे क्रीडत: कांश्चित् बालकान् प्रेक्ष्य अवदताम्–भो, भो बालका:! कथमत्र नतोन्नते विषमे मार्गे क्रीडथ? यदि कश्चिद् गर्ते पतेत् तर्हि स विकलाङ्गो भूत्वा चिरं क्लेशम् अनुभवेत्। तच्छ्रुत्वा तेषु कश्चित् उद्दण्ड: बालक: उवाच–अयि भो! यद्येवं तर्हि कथं भवन्तौ सुपथं परित्यज्य अनेन कुपथेन गन्तुं प्रवृत्तौ? अपि इदम् श्रेयस्करम्?*

हिंदी अनुवाद (Hindi Translation)

जाते हुए वे दोनों गड्ढों से भरे हुए रास्ते में खेलते हुए कुछ बालकों को देखकर बोले–हे बालको! आप सब इस ऊँचे-नीचे कठिन (समतल हीन) मार्ग पर क्यों खेल रहे हैं? यदि कोई गड्ढे में गिर जाए तो वह विकलांग होकर बहुत लम्बे समय तक दु:खी रहेगा। उसे सुनकर उनमें से कोई शरारती बालक बोला–अरे यदि ऐसा है तो आप दोनों श्रेष्ठ मार्ग को छोड़कर इस कुमार्ग से जाने के लिए क्यों उद्यत हैं? क्या यह कल्याणकारी है?

शब्दार्था: (Word-meanings Sanskrit to Sanskrit, Hindi and English)

व्रजन्तौ–गच्छन्तौ, जाते हुए दोनों (While going)। **गर्ते संकुले**–गर्तपरिपूर्णे, गड्ढों से भरे हुए (Full of potholes)। **प्रेक्ष्य**–दृष्ट्वा, देखकर (Having seen)।

समासा: (Compounds)

नतोन्नते	–	नत: च उन्नत: च, तस्मिन् (द्वन्द्व:)।
श्रेयस्करम्	–	श्रेय: करोति इति (उपपद तत्पुरुष:)।
कुपथेन	–	कुत्सितेन पथेन (कर्मधारय:)।
गर्तसङ्कुले	–	गर्तै: सङ्कुले (तृतीया तत्पुरुष:)।
विकलाङ्ग	–	विकलानि अङ्गानि यस्य स: (बहुव्रीहि:)।
सुपथम्	–	पथस्य समृद्धि: (अव्ययीभाव:)।

सन्धि-विच्छेद: (Disjoin Sandhi)

कांश्चित्	–	कान्	+	चित् (अनुस्वार सन्धि:)।
विकलाङ्ग:	–	विकल	+	अङ्ग: (दीर्घ सन्धि:)।
कश्चिद्	–	क:	+	चिद् (विसर्ग सन्धि:)।
तच्छ्रुत्वा	–	तत्	+	श्रुत्वा (छत्व सन्धि:)।
यद्येवम्	–	यदि	+	एवम् (यण् सन्धि:)।
श्रेयस्करम्	–	श्रेय:	+	करम् (विसर्ग सन्धि:)।
नतोन्नते	–	नत	+	उन्नते (गुण सन्धि:)।

प्रत्यया: (Suffixes)

प्रेक्ष्य	–	प्र	+ ईक्ष् + ल्यप्।
श्रुत्वा	–	श्रु	+ क्त्वा।
गन्तुम्	–	गम्	+ तुमुन्।
प्रवृत्तौ	–	प्र	+ वृत् + क्त।
व्रजन्तौ	–	व्रज्	+ शतृ।
परित्यज्य	–	परि	+ त्यज् + ल्यप्।
क्रीडत:	–	क्रीड्	+ शतृ।

प्रश्ना: (Questions)

(I) एकपदेन उत्तरत–

(*i*) कीदृश: बालक: उवाच? (*ii*) गर्ते पतित्वा कश्चित् किम् अनुभवेत्?

(II) पूर्णवाक्येन उत्तरत–

तौ बालकान् किम् अवदताम्?

(III) भाषिककार्यम्–

(*i*) 'त्यक्त्वा' इत्यर्थे अत्र किम् पदम् प्रयुक्तम्?
(क) परित्यज्य (ख) भूत्वा (ग) त्यजित्वा (घ) गन्तुम्

(*ii*) 'उद्दण्ड: बालक:' अनयो: पदयो: विशेष्य पदम् किम्?
(क) उद्दण्ड (ख) उद्दण्ड: (ग) बालक: (घ) बालकम्

(*iii*) 'विषमे मार्गे' इति अनयो: पदयो: विशेषणपदं किम्?
(क) विषम: (ख) विषमे (ग) मार्गे (घ) मार्ग:

(*iv*) 'अवदताम्' इति क्रियाया: कर्तृपदं किम्?
(क) व्रजन्तौ (ख) क्रीडत: (ग) कांश्चित् (घ) तौ (दुष्टबुद्धिप्रच्छन्नभाग्यौ)

(*v*) 'कुपथम्' इति पदस्य विपर्यपदं किम्?
(क) उत्पथम् (ख) सुपथम् (ग) अतिपथम् (घ) दुष्पथम्

उत्तराणि– (I) (*i*) उद्दण्ड: (*ii*) क्लेशम्।

(II) तौ बालकान् अवदताम्–भो भो बालका:! कथमत्र नतोन्नते विषमे मार्गे क्रीडथ? यदि कश्चिद् गर्ते पतेत् तर्हि स विकलाङ्गो भूत्वा चिरम् क्लेशम् अनुभवेत्।

(III) (*i*) (क) परित्यज्य (*ii*) (ग) बालक: (*iii*) (ख) विषमे (*iv*) (घ) तौ (दुष्ट बुद्धि प्रच्छन्न भाग्यौ) (*v*) (ख) सुपथम्।

प्रश्ननिर्माणम्– (*i*) बालका: **नतोन्नते** मार्गे क्रीडन्ति स्म। (*ii*) एक: उद्दण्ड: **बालक:** उवाच। (*iii*) तौ **बालकान्** दृष्ट्वा अवदताम्। (*iv*) यदि बालका: गर्ते पतिष्यन्ति तर्हि **विकलाङ्गा:** भविष्यन्ति।

उत्तराणि–(*i*) कीदृशे (*ii*) क: (*iii*) कान् (*iv*) कीदृशा:।

3. ***अनेन वचसा प्रतिहतान्त:करण: प्रच्छन्नभाग्य: अचिन्तयत्–किम् इदं वचनं विशेषेण माम् एव लक्ष्यीकरोति? अहो! कुमार्गम् आश्रितस्य मम कीदृशी इयं क्लेशपरम्परा। गुरूपदेशेन इव अनेन बालवचसा मम चक्षुषी समुन्मीलिते। अद्यप्रभृति पापपथं त्यजामि इति विचिन्त्य मित्रं दुष्टबुद्धिम् अवदत् 'सखे! यदि मां मित्रस्थाने परिगणयसि, तर्हि साधुजनगर्हितम् इमं पन्थानं त्यजतु भवान्।'***

हिंदी अनुवाद (Hindi Translation)

इस वचन से घायल हुए हृदय वाले प्रच्छन्नभाग्य ने सोचा–क्या यह वचन विशेषकर मुझे ही लक्ष्य कर रहा है। अरे! बुरे मार्ग का आश्रय लेने वाले मुझे किस प्रकार की यह दु:खों की परम्परा प्राप्त हुई। गुरु के उपदेश की भाँति बालक के इस वचन से मेरी आँखें खुल गई हैं। आज से मैं इस पाप के मार्ग को छोड़ रहा हूँ; ऐसा सोचकर वह मित्र दुष्टबुद्धि को बोला–हे मित्र! यदि आप मुझे मित्र के स्थान पर गिनते हैं, तो आप सज्जनों के द्वारा निन्दित इस रास्ते को छोड़ दें।

शब्दार्था: (Word–meanings Sanskrit to Sanskrit, Hindi and English)

प्रतिहतान्त:करण:–उद्विग्न:, दुखी मन वाला (With disturbed mind)। **कुमार्गम्**–कुपथम्, बुरा रास्ता (Evil way)। **अद्यप्रभृति**–अद्यकालात्, आज से लेकर (From today)। **गर्हितम्**–तिरस्कृतम्, निन्दित (Condemned)।

समासा: (Compounds)

प्रतिहतान्त:करण:	–	प्रतिहत: अन्त:करण: यस्य स: (बहुव्रीहि:)।
कुमार्गम्	–	कुत्सितं मार्गम् (अव्ययीभाव:)।
पापपथम्	–	पापस्य पथम् (षष्ठी तत्पुरुष:)।
साधुजनगर्हितम्	–	साधुजनै: गर्हितम् (तृतीया तत्पुरुष:)।
दुष्टबुद्धिम्	–	दुष्टा बुद्धि: यस्य स:, तम् (बहुव्रीहि:)।

सन्धि-विच्छेदः (Disjoin Sandhi)

प्रतिहतान्तःकरणः:– प्रतिहत + अन्तःकरणः (दीर्घसन्धिः)।
गुरूपदेशेन – गुरु + उपदेशेन (दीर्घसन्धिः)।

प्रत्यया: (Suffixes)

समुन्मीलिते – सम् + उत् + मिल् + क्त।
कीदृशी – कीदृश + ङीप्।
विचिन्त्य – वि + चिन्त् + ल्यप्।
समुन्मीलिते – सम् + उत् + मील् + क्त।
गर्हितम् – **गर्ह्** + क्त।

प्रश्ना: (Questions)

(I) एकपदेन उत्तरत–

(*i*) कीदृशः प्रच्छन्नभाग्यः अचिन्तयत्? (*ii*) क्लेश परम्परा कम् आश्रितस्य भवति?

(II) पूर्णवाक्येन उत्तरत–

सः दुष्टबुद्धिम् किम् अवदत्?

(III) भाषिककार्यम्–

(*i*) 'त्यजतु' क्रियापदस्य कर्तृपदम् किम्?
(क) त्वम् (ख) अहम् (ग) भवान् (घ) मित्रम्

(*ii*) 'नेत्रे' इत्यर्थे अत्र किम् पदम् प्रयुक्तम्?
(क) चक्षुषी (ख) नयने (ग) स्थाने (घ) समुन्मीलितं

(*iii*) 'माम्' इति सर्वनामपदस्य प्रयोगः कस्मै अभवत्?
(क) प्रच्छन्नभाग्याय (ख) भाग्याय (ग) प्रच्छन्नाय (घ) दुष्टबुद्धये

(*iv*) 'चक्षुषी' इति पदम् कस्मिन् वचने अस्ति?
(क) एकवचने (ख) बहुवचने (ग) कस्मिन्नपि न (घ) द्विवचने

उत्तराणि– (I) (*i*) प्रतिहतान्तःकरणः। (*ii*) कुमार्गम्।

(II) सः दुष्टबुद्धिम् अवदत्-'सखे! यदि मां मित्रस्थाने परिगणयसि, तर्हि साधुजनगर्हितम् इमम् पन्थानं त्यजतु भवान्।'

(III) (*i*) (ग) भवान् (*ii*) (क) चक्षुषी (*iii*) (क) प्रच्छन्नभाग्याय (*vi*) (घ) द्विवचने।

प्रश्ननिर्माणम्– (*i*) सखे! यदि **माम्** मित्रस्थाने परिगणयसि। (*ii*) **प्रतिहतान्तःकरणः** प्रच्छन्नभाग्यः अचिन्तयत्।
(*iii*) **प्रच्छन्नभाग्यः** मित्रं दुष्टबुद्धिम् अवदत्। (*iv*) इदं वचनं **माम्** एव लक्ष्यीकरोति।
(*v*) साधुजनगर्हितम् पन्थानं त्यजतु **भवान्**।

उत्तराणि–(*i*) कम् (*ii*) कीदृशः (*iii*) कः (*iv*) कम् (*v*) कः।

4. ***दुष्टबुद्धिः तु तस्य सद्वचनानि तिरस्कृत्य ग्रामाभिमुखं प्राचलत्। प्रच्छन्नभाग्यः तु समुपजातविवेकः स्वगृहं प्रतिनिवृत्तः।***

गृहे तस्य भार्या सपदि समागतं पतिं दृष्ट्वा अपृच्छत्–आर्य! किं सर्वगतं कुशलं वर्तते? अयथाकालं समागतोऽसि? सम्प्रति धर्ममतिः सः पश्चात्तापेन दग्धमानसः सर्वं वृत्तान्तं निवेद्य सकरुणम् उच्चैः अक्रन्दत्। बुद्धिमती सा अवदत्–अलं चिन्तया। आपदां तरणिः धैर्यम्। इदानीं विषादं त्यक्त्वा उद्यमः क्रियताम्।

हिंदी अनुवाद (Hindi Translation)

दुष्टबुद्धि उसके अच्छे वचनों को तिरस्कृत करके गाँव की ओर चल पड़ा। उत्पन्न हुए विवेक वाला प्रच्छन्नभाग्य तो अपने घर की ओर लौट गया।

घर में उसकी पत्नी अति शीघ्र आए हुए पति को देखकर पूछने लगी–आर्य! क्या सब ओर से कुशल तो है। असमय पर आए हो। तब पश्चात्ताप से संतप्त हृदयवाला वह धर्मबुद्धि (प्रच्छन्नभाग्य) सारे वृत्तान्त को बताकर दु:ख से जोर से रोने लगा। वह विदुषी बोली–चिन्ता मत करो। धैर्य विपत्तियों की नौका होती है। अब दु:ख को छोड़कर परिश्रम करो।

शब्दार्थाः (Word-meanings Sanskrit to Sanskrit, Hindi and English)

तिरस्कृत्य–न अवमत्य, न मानकर (After defying)। **प्रतिनिवृत्तः**–प्रत्यागतः, लौट आया (Came back)। **सपदि**–शीघ्रम्, जल्दी (Soon)। **दग्धमानसः**–विदग्धमानसः/अतीव दु:खी मानसः, दु:खी/दग्ध हृदय वाला (Tormented)।

समासाः (Compounds)

ग्रामाभिमुखम् – ग्रामस्य अभिमुखम् (षष्ठी तत्पुरुषः)।
अन्यथाकलम् – न यथाकालम् (नञ् तत्पुरुषः)।
धर्ममतिः – धर्मे मतिः यस्य सः (बहुव्रीहिः)।
दग्धमानसः – दग्धम् मानसम् यस्य सः (बहुव्रीहिः)।
सद्वचनानि – शोभनानि वचनानि (कर्मधारयः)।
दुष्टबुद्धिः – दुष्टा बुद्धिः यस्य सः (बहुव्रीहिः)।
सकरुणम् – करुणया सहितम् (अव्ययीभावः)।
सर्वगतम् – सर्वम् गतम् (कर्मधारयः)।

सन्धि-विच्छेदः (Disjoin Sandhi)

सद्वचनानि – सत् + वचनानि (जश् सन्धिः)।
समागतोऽसि – समागतः + असि (विसर्गसन्धिः)।
ग्रामाभिमुखम् – ग्राम + अभिमुखम् (दीर्घसन्धिः)।
तिरस्कृत्य – तिरः + कृत्य (विसर्गसन्धिः)।
सर्व वृत्तान्तम् – सर्वम् + वृत्तान्तम् (अनुस्वार सन्धिः)

प्रत्ययाः (Suffixes)

तिरस्कृत्य – तिरस् + कृ + ल्यप्।
तरणिः – तृ (तर) + क्तिन्।
त्यक्त्वा – त्यज् + क्त्वा।
प्रतिनिवृत्तः – प्रति + नि + वृञ् + क्त।
निवेद्य – नि + विद् + ल्यप्।
बुद्धिमती – बुद्धि + मतुप् + ङीप्।
समागतम् – सम् + आ + गम् + क्त।

प्रश्नाः (Questions)

(I) एकपदेन उत्तरत–

(*i*) कः स्वगृहं प्रतिनिवृत्तः? (*ii*) कः उच्चैः अक्रन्दत्?

(II) पूर्णवाक्येन उत्तरत–

(*i*) दुष्टबुद्धिः किम् अकरोत्? (*ii*) बुद्धिमती का आसीत्?

(III) भाषिककार्यम्–

(*i*) 'दु:खम्' अस्य पर्यायं गद्यांशात् एव चित्वा लिखत।
(क) विषादम् (ख) पश्चात्तापेन (ग) इदानीं (घ) निवेद्य

(*ii*) 'आपदाम्' इति पदम् कस्याम् विभक्तौ?
(क) सप्तमी (ख) द्वितीया (ग) षष्ठी (घ) पंचमी

(*iii*) 'अधुना' इति अर्थे किं पदं अत्र प्रयुक्तम्?

(क) अद्य (ख) सम्प्रति (ग) साम्प्रतम् (घ) इदानीम्

(*iv*) 'धर्ममति:' इति कस्य विशेषणम्?

(क) प्रच्छन्नभाग्यस्य (ख) बुद्धिमत्या: (ग) दुष्टबुद्धे: (घ) चौरस्य

(*v*) 'अक्रन्दत्' इति क्रियाया: कर्तृपदं किम्?

(क) धर्ममति: (ख) सम्प्रति (ग) वृत्तान्तं (घ) स: (प्रच्छन्नभाग्य:)

उत्तराणि– (I) (*i*) प्रच्छन्नभाग्य:। (*ii*) प्रच्छन्नभाग्य:।

(II) (*i*) दुष्टबुद्धि: प्रच्छन्नभाग्यस्य सद्वचनानि तिरस्कृत्य ग्रामाभिमुखम् प्राचलत्। (*ii*) प्रच्छन्नभाग्यस्य पत्नी बुद्धिमती आसीत्।

(III) (*i*) (क) विषादम् (*ii*) (ग) षष्ठी (*iii*) (ख) सम्प्रति (*iv*) (क) प्रच्छन्नभाग्यस्य (*v*) (घ) स: (प्रच्छन्नभाग्य:)।

प्रश्ननिर्माणम्– (*i*) गृहे तस्य भार्या शीघ्रं आगतं **पतिं** दृष्ट्वा अवदत्। (*ii*) दुष्टबुद्धि: **ग्रामाभिमुखं** प्राचलत्। (*iii*) **आपदां** तरणि: धैर्यम्। (*iv*) **बुद्धिमती** सा अवदत्।

उत्तराणि–(*i*) कम् (*ii*) कुत्र (*iii*) कासाम् (*iv*) कीदृशी।

5. *क्रन्दनं वर्धते तस्य, नान्तं समधिगच्छति।*
व्यसनं प्राप्य यो मोहात् केवलं परिदेवयेत्॥1॥

हिंदी अनुवाद (Hindi Translation)

जो व्यक्ति दु:खों को प्राप्त कर मोहवश केवल रोए उसका रोना बढ़ता ही रहता है और वह कभी समाप्ति को प्राप्त नहीं होता।

अन्वय: (Prose-order)

क्रन्दनं वर्धते तस्य, नान्तं समधिगच्छति।
व्यसनं प्राप्य यो मोहात् केवलं परिदेवयेत्॥1॥

य: (*i*) मोहात् .... प्राप्य (*ii*) .... परिदेवयेत् तस्य (*iii*) .... वर्धते, (*iv*) .... (च) न समधिगच्छति।

मञ्जूषा– केवलं, अन्तं, व्यसनं, क्रन्दनं

उत्तराणि–(*i*) व्यसनं (*ii*) केवलं (*iii*) क्रन्दनं (*iv*) अन्तं।

शब्दार्था: (Word-meanings Sanskrit to Sanskrit, Hindi and English)

व्यसनं–वि + असनम्, बुरी आदत (Bad habit)। **परिदेवयेत्**–क्रन्देत्, रोए (Should weep)।

संस्कृते भावार्थ: (Summary)

क्रन्दनं वर्धते तस्य, नान्तं समधिगच्छति।
व्यसनं प्राप्य यो मोहात् केवलं परिदेवयेत्॥1॥
अर्थात्–अस्य भावोऽस्ति यत्–

प्रच्छन्नभाग्यस्य (*i*) .... पत्नी तम् शिक्षयति यत् य: जन: (*ii*) .... कृत्वा सम्मोहात् केवलं **विषादं** करोति तस्य (*iii*) .... एव वर्धते, तत् क्रन्दनं दु:खम् च कदापि (*iv*) .... न प्राप्नोति।

मञ्जूषा– दुष्कर्म, रोदनम्, बुद्धिमती, अन्त:।

उत्तराणि–(*i*) बुद्धिमती (*ii*) दुष्कर्म (*iii*) रोदनम् (*iv*) अन्तं।

सन्धि-विच्छेद: (Disjoin Sandhi)

नान्तम् – न + अन्तम् (दीर्घसन्धि:)।
समधिगच्छति – सम् + अधिगच्छति (संयोग:)।

प्रत्यया: (Suffixes)

व्यसनम् – वि + अस् + ल्युट्।
प्राप्य – प्र + आप् + ल्यप्।

प्रश्ना: (Questions)

(I) एकपदेन उत्तरत–

(*i*) किम् प्राप्य जन: दु:खी भवति? (*ii*) अन्तम् किम् न समधि गच्छति?

(II) पूर्णवाक्येन उत्तरत–

क्रन्दनं कस्य वर्धते?

(III) भाषिककार्यम्–

(*i*) 'रोदनम्' इत्यर्थे अत्र किं पदं प्रयुक्तम्?

(क) नान्तम् (ख) क्रन्दनम् (ग) केवलम् (घ) विषादम्

(*ii*) 'वर्धते' इति क्रियापदस्य कर्तृपदं किम्?

(क) क्रन्दनम् (ख) रोदनम् (ग) नान्तम् (घ) केवलम्

(*iii*) 'परिदेवयेत्' इति पदं कस्मिन् लकारे वर्तते?

(क) लट् (ख) लङ् (ग) लोट् (घ) विधिलिङ्

(*iv*) 'समधिगच्छति इति पदे का मूलधातु:?

(क) समधि (ख) गच्छ् (ग) गम् (घ) समधिगम्

उत्तराणि– (I) (*i*) व्यसनं। (*ii*) क्रन्दनम्।

(II) य: व्यसनं प्राप्य मोहात् केवलं परिदेवयेत् तस्य क्रन्दनं वर्धते।

(III) (*i*) (ख) क्रन्दनम् (*ii*) (क) क्रन्दनम् (*iii*) (घ) विधिलिङ् (*iv*) (ग) गम्।

प्रश्ननिर्माणम्– (*i*) मोही जनस्य **क्रन्दनं** वर्धते। (*ii*) तस्य **अन्तं** न समधिगच्छति।
(*iii*) य: **मोहात्** व्यसनं प्राप्नोति। (*iv*) **स:** केवलं परिदेवयति।

उत्तराणि–(*i*) किम् (*ii*) किम् (*iii*) कस्मात् (*iv*) क:।

6. ***जलबिन्दुनिपातेन क्रमश: पूर्यते घट:।***
स हेतु: सर्वविद्यानां धर्मस्य च धनस्य च॥2॥

एवं बहुविधम् उपदेशं श्रुत्वा शान्तचित्त: स: कस्यचित् कृषकस्य शस्यक्षेत्रे हलकार्यं कर्तुं प्रारभत, श्रमेण च शनै: शनै: प्रभूतं धनम् अर्जितवान्।

हिंदी अनुवाद (Hindi Translation)

पानी की एक-एक बूँद के गिरने से धीरे-धीरे घड़ा भर जाता है। वह (अभ्यास और धैर्य) ही सभी प्रकार की विद्याओं, धर्म और धन का कारण होता है।

इस तरह अनेक प्रकार के उपदेश सुनकर शांत मन वाले उसने (प्रच्छन्नभाग्य ने) किसी किसान के फसल वाले खेत में हल चलाने (मज़दूरी) का कार्य प्रारम्भ कर दिया और धीरे-धीरे परिश्रम से अत्यधिक धन कमा लिया।

अन्वय: (Prose-order)

जलबिन्दुनिपातेन क्रमश: पूर्यते घट:।
स हेतु: सर्वविद्यानां धर्मस्य च धनस्य च॥2॥

यथा जलबिन्दु–(*i*) .... क्रमश: (*ii*) .... पूर्यते (तथैव) (*iii*) .... धर्मस्य च (*iv*) .... च स: (एव) हेतु: (भवति)।

मञ्जूषा– | सर्वविद्यानां, निपातेन, धनस्य, घट: |

उत्तराणि–(*i*) निपातेन (*ii*) घट: (*iii*) सर्वविद्यानां (*iv*) धनस्य।

शब्दार्था: (Word-meanings Sanskrit to Sanskrit, Hindi and English)

घट:–कलश:, मटका (Pot)। **शस्यक्षेत्रे**–अन्नक्षेत्रे, खेत में (In the farm)।

संस्कृते भावार्थः (Summary)

जलबिन्दुनिपातेन क्रमशः पूर्यते घटः।
स हेतुः सर्वविद्यानां धर्मस्य च धनस्य च॥2॥

प्रच्छन्नभाग्यस्य (*i*) .... पत्नी तम् शिक्षयति यत् चिन्तां मा कुरु यथा क्रमशः (*ii*) .... निपातेन घटः (*iii*) .... प्राप्नोति तथैव सर्वविद्यानाम् (*iv*) .... च धनस्य च सः हेतुः भवति।

मञ्जूषा– जलबिन्दूनां, बुद्धिमती, धर्मस्य, पूर्णतां

उत्तराणि–(*i*) बुद्धिमती (*ii*) जलबिन्दूनां (*iii*) पूर्णतां (*iv*) धर्मस्य।

समासा: (Compounds)

जलबिन्दुनिपातेन	–	जलस्य बिन्दूनाम् निपातेन (षष्ठी तत्पुरुषः)।
शान्तचित्तः	–	शान्तम् चित्तम् यस्य सः (बहुव्रीहिः)।
शस्यक्षेत्रे	–	शस्यानाम् क्षेत्रे (षष्ठी तत्पुरुषः)।
प्रभूतं धनम्	–	प्रभूतधनम् (कर्मधारयः)।
हलकार्यम्	–	हलस्य कार्यम् (षष्ठी तत्पुरुषः)।
धर्मस्य च धनस्य च	–	धर्मधनयोः (द्वन्द्वः)।
सर्वविद्यानाम्	–	सर्वासाम् विद्यानाम् (कर्मधारयः)।

सन्धि-विच्छेदः (Disjoin Sandhi)

प्रभूतं धनम् – प्रभूतम् + धनम् (व्यञ्जन सन्धिः)।

प्रत्ययाः (Suffixes)

कर्तुम्	–	कृ + तुमुन्।
श्रुत्वा	–	श्रु + क्त्वा।
अर्जितवान्	–	अर्ज् + क्तवतु।

प्रश्नाः (Questions)

(I) एकपदेन उत्तरत–

(*i*) घटः कथम् पूर्यते? (*ii*) श्रमेण सः कियत् धनम् अर्जितवान्?

(II) पूर्णवाक्येन उत्तरत–

कः हलकार्यं कर्तुं प्रारभत?

(III) भाषिककार्यम्–

(*i*) 'अत्यधिकम्' इत्यर्थे अत्र किं पदं प्रयुक्तम्?
(क) धनम् (ख) शनैः-शनैः (ग) प्रभूतम् (घ) बहुविधम्

(*ii*) 'शान्तचित्तः' इति कस्य विशेषणम्?
(क) चौरस्य (ख) प्रच्छन्नभाग्यस्य (ग) प्रच्छन्नस्य (घ) दुष्टबुद्धेः

(*iii*) 'कारणम्' इति पदस्य कः पर्यायः प्रयुक्तः?
(क) हेतुः (ख) सः (ग) क्रमशः (घ) घटः

(*iv*) 'अर्जितवान्' इति क्रियायाः कर्तृपदं किम्?
(क) चौरः (ख) दुष्टबुद्धिः (ग) स (प्रच्छन्नभाग्यः) (घ) धनम् प्रभूतम्

उत्तराणि– (I) (*i*) जलबिन्दुनिपातेन। (*ii*) प्रभूतम्।

(II) प्रच्छन्नभाग्यः हलकार्यं कर्तुं प्रारभत।

(III) (*i*) (ग) प्रभूतम् (*ii*) (ख) प्रच्छन्नभाग्यस्य (*iii*) (क) हेतुः (*iv*) (ग) सः (प्रच्छन्नभाग्यः)।

प्रश्ननिर्माणम्– (*i*) घटः क्रमशः **जलबिन्दूनां** निपातेन पूर्यते।

(*ii*) सर्वाः विद्याः अपि **परिश्रमेण** क्रमशः एव आगच्छन्ति।

(*iii*) उपदेशं श्रुत्वा सः **शान्तचित्तः** अभवत्।

(*iv*) सः **श्रमेण** प्रभूतं धनम् अर्जितवान्।

(*v*) **प्रच्छन्नभाग्यः** कृषकस्य क्षेत्रे कार्यम् अकरोत्।

उत्तराणि–(*i*) केषाम् (*ii*) केन (*iii*) कीदृशः (*iv*) केन / कथम् (*v*) कः।

7. ***अथ पूर्वमित्रं दुष्टबुद्धिः प्रच्छन्नभाग्यस्य धनागमवृत्तान्तं श्रुत्वा कदाचित् मध्यरात्रे तस्य एव गृहे चौर्यार्थं सन्धि- खननसुयोगम् विलोकयन् स्थितः। तस्मिन्नेव काले सुप्तोत्थितः प्रच्छन्नभाग्यः सम्भ्रान्तचित्तः स्वपत्नीं सम्बोध्य उवाच–अहो विचित्रः स्वप्नः मया दृष्टः। अस्माकं क्षेत्रे अश्वत्थ तरुमूले सुवर्णपूरितः कलशः विद्यते इति।***

हिंदी अनुवाद (Hindi Translation)

इसके बाद उस प्रच्छन्नभाग्य का पूर्वमित्र दुष्टबुद्धि उसकी धन प्राप्ति के वृत्तान्त को सुनकर कभी आधी रात को उसके (प्रच्छन्नभाग्य) घर में चोरी करने के लिए सेंध लगाने का सुअवसर देखने लगा। उसी समय सोकर उठा हुआ व्याकुल मन वाला प्रच्छन्नभाग्य अपनी पत्नी को सम्बोधित करके बोला–अरे! मैंने एक अनोखा स्वप्न देखा है। हमारे खेत में पीपल के पेड़ की जड़ में सोने से भरा हुआ एक घड़ा है।

शब्दार्थाः (Word-meanings Sanskrit to Sanskrit, Hindi and English)

सम्भ्रान्तचित्तः–सम्भ्रान्तमानसः, घबराए हुए (Disturbed)। **विलोकयन्**–पश्यन्, देखता हुआ (To see)। **श्रुत्वा**–आकर्ण्य, सुनकर (After listening)।

समासाः (Compounds)

पूर्वमित्रम् – पूर्वम् मित्रम् (कर्मधारयः)।
चौर्यार्थम् – चौर्यस्य अर्थम् (षष्ठी तत्पुरुषः)।
विचित्रः स्वप्नः – विचित्रस्वप्नः (कर्मधारयः)।
अश्वत्थतरुमूले – अश्वत्थस्य तरुः (षष्ठी तत्पुरुषः), तस्य मूले (षष्ठी तत्पुरुषः)।
सम्भ्रान्तचित्तः – सम्भ्रान्तं चित्तं यस्य सः (बहुव्रीहिः)।
सुवर्णपूरितः – सुवर्णेन पूरितः (तृ० तत्पुरुषः)।
धनागमवृत्तान्तम् – धनस्य आगमः (षष्ठी तत्पुरुषः), तस्य वृत्तान्तम् (षष्ठी तत्पुरुषः)।

सन्धि-विच्छेदः (Disjoin Sandhi)

सुप्तोत्थितः – सुप्त + उत्थितः (गुण सन्धिः)।
तस्मिन्नेव – तस्मिन् + एव (व्यञ्जन सन्धिः)।
धनागम – धन + आगम (दीर्घ सन्धिः)।
चौर्यार्थम् – चौर्य + अर्थम् (दीर्घ सन्धिः)

प्रत्ययाः (Suffixes)

विलोकयन् – वि + लोक् + शतृ।
सम्बोध्य – सम् + बुध् + ल्यप्।
श्रुत्वा – श्रु + क्त्वा।
स्थितः – स्था + क्त।

उत्थितः – उत् + स्था + क्त।
दृष्टः – दृश् + क्त।

प्रश्नाः (Questions)

(I) एकपदेन उत्तरत–

(*i*) कः धनागमवृत्तान्तं श्रुतवान्? (*ii*) कः स्वपत्नीम् अवदत्?

(II) पूर्णवाक्येन उत्तरत–

क्षेत्रे किम् विद्यते?

(III) भाषिककार्यम्–

(*i*) 'अस्ति' इत्यर्थे अनुच्छेदे किं पदं प्रयुक्तम्?
(क) स्थितः (ख) विद्यते (ग) दृष्टः (घ) इति

(*ii*) 'तस्मिन् एव काले' इत्येषु विशेषणपदं किम्?
(क) एष (ख) काले (ग) तस्मिन् (घ) तस्मिन्नेव

(*iii*) 'विलोकयन्' इति पदे कः प्रत्ययः?
(क) शानच् (ख) शतृ (ग) क्त्वा (घ) क्त

(*iv*) 'उवाच' इति क्रियायाः कर्तृपदं किम्?
(क) काले (ख) तस्मिन्नेव (ग) स्वपत्नीं (घ) प्रच्छन्नभाग्यः

(*v*) 'स्थितः' पदे का मूलधातुः?
(क) स्थि (ख) स्था (ग) तिष्ठ् (घ) स्थित

उत्तराणि– (I) (*i*) दुष्टबुद्धिः (*ii*) प्रच्छन्नभाग्यः।
(II) क्षेत्रे अश्वत्थतरुमूले सुवर्णपूरितः कलशः विद्यते।
(III) (*i*) (ख) विद्यते (*ii*) (ग) तस्मिन् (*iii*) (ख) शतृ (*iv*) (घ) प्रच्छन्नभाग्यः (*v*) (ख) स्था।

प्रश्ननिर्माणम्– (*i*) अहो, मया **विचित्रः** स्वप्नः दृष्टः।
(*ii*) सुवर्णपूरितः कलशः **अश्वत्थतरुमूले** स्थितः विद्यते।
(*iii*) सम्भ्रान्तचित्तः **प्रच्छन्नभाग्यः** स्वपत्नीं सम्बोध्य उवाच।
(*iv*) चौरः **मध्यरात्रे** तत्र चौर्यार्थम् आगत्य स्थितः।

उत्तराणि–(*i*) कीदृशः (*ii*) कुत्र (*iii*) कः (*iv*) कदा।

8. ***तच्छ्रुत्वा परद्रव्ये अनासक्ता सा न्यवेदयत्–नाथ! विरम अस्माद् लोभात्। दुष्टबुद्धिः तु तयोः वार्तां श्रुत्वा झटिति एव क्षेत्रं गतः। तत्र अश्वत्थमूलं खनित्वा तं सुवर्णकलशं प्राप्तवान्। यदा स तस्य आवरणम् अपसारयति तदैव भयङ्करम् एकं विषधरं फूत्कारं कुर्वन्तं पश्यति। भीतः स कलशं पुनः आवृत्त्य तम् च आदाय मित्रस्य गृहं समागतः। स्वमित्रं सर्पेण मारयितुम् इच्छन् सः भित्तौ सन्धिं प्रकल्प्य तन्मध्यतः कलशं गृहाभ्यन्तरे क्षिप्तवान्।***

हिंदी अनुवाद (Hindi Translation)

यह सुनकर दूसरे के धन पर आसक्त न होने वाली (लालच न करने वाली) उसने निवेदन किया–स्वामी! इस लोभ से बस करो। उन दोनों की बात को सुनकर दुष्टबुद्धि ने शीघ्र ही खेत में जाकर पीपल की जड़ को खोदकर तथा उस सोने के घड़े को प्राप्त कर जब उसके ढक्कन को हटाया तब एक भयंकर साँप को फुँफकारते हुए देखा। डरा हुआ वह घड़े को फिर ढँककर और उस घड़े को लेकर वह मित्र (प्रच्छन्नभाग्य) के घर आ गया। अपने मित्र को साँप से मरवाने की इच्छा करते हुए उसने दीवार में सेंध लगाकर उसके अंदर से कलश को घर के अंदर फेंक दिया।

शब्दार्थाः (Word-meanings Sanskrit to Sanskrit, Hindi and English)

अनासक्ता–विरक्ता, जिसे लगाव न हो (Detached)। **झटिति**–आशु, जल्दी (Soon)। **आवरणम्**–आच्छादनम्, ढक्कन (Cover)। **भित्तौ**–भीत्यन्तरे, दीवार में (In the wall)। **सन्धिम्**–छिद्रं, छेद को (Hole)।

समासाः (Compounds)

परद्रव्ये	–	परेषाम् द्रव्ये (षष्ठी तत्पुरुषः)।
अश्वत्थमूलम्	–	अश्वत्थस्य मूलम् (षष्ठीं तत्पुरुषः)।
मित्रस्य गृहम्	–	मित्रगृहम् (षष्ठी तत्पुरुषः)।
स्वमित्रम्	–	स्वम् मित्रम् (कर्मधारयः)।
तन्मध्यतः	–	तस्य मध्यतः (षष्ठी तत्पुरुषः)।
गृहाभ्यन्तरे	–	गृहस्य अभ्यन्तरे (षष्ठी तत्पुरुषः)।
अनासक्ता	–	न आसक्ता (नञ् तत्पुरुषः)।
सुवर्णकलशम्	–	सुवर्णस्य कलशम् (षष्ठी तत्पुरुषः)।
विषधरम्	–	विषं धारयति इति, तम् (उपपद तत्पुरुषः)।
भयङ्करम्	–	भयम् करोति इति तम् (उपपद तत्पुरुषः)।

सन्धि-विच्छेदः (Disjoin Sandhi)

तन्मध्यतः	–	तत्	+ मध्यतः (व्यञ्जन सन्धिः)।
न्यवेदयत्	–	नि	+ अवेदयत् (यण् सन्धिः)।
अस्माद् लोभात्	–	अस्मात्	+ लोभात् (जश् सन्धिः)।
तदैव	–	तदा	+ एव (वृद्धि-सन्धि)।
भयङ्करम्	–	भयम्	+ करम् (परसवर्ण सन्धिः)।
गृहाभ्यन्तरे	–	गृह	+ अभ्यन्तरे (दीर्घ सन्धिः)।
तच्छ्रुत्वा	–	तत्	+ श्रुत्वा (छत्व सन्धिः)।

प्रत्ययाः (Suffixes)

अनासक्ता	–	अन् + आसक्त+ टाप्।
श्रुत्वा	–	श्रु + क्त्वा।
गतः	–	गम् + क्त।
कुर्वन्तं	–	कृ + शतृ।
भीतः	–	भी + क्त।
मारयितुम्	–	मृ + णिच् + तुमुन्।
प्रकल्प्य	–	प्र + कल्प् + ल्यप्।
मध्यतः	–	मध्य + तसिल्।
प्राप्तवान्	–	प्र + आप् + क्तवतु।
आवृत्य	–	आ + वृञ् + ल्यप्।
आदाय	–	आ + दा + ल्यप्।
इच्छन्	–	इष् + शतृ।
क्षिप्तवान्	–	क्षिप् + क्तवतु।

प्रश्नाः (Questions)

(I) एकपदेन उत्तरत–

(*i*) अत्र प्रच्छन्नभाग्यस्य पत्नी कृते किं पदं प्रयुक्तम्? (*ii*) चौरः कम् गृहे क्षिप्तवान्?

(II) पूर्णवाक्येन उत्तरत–

(*i*) दुष्टबुद्धिः कलशं गृहाभ्यन्तरे किमर्थं क्षिप्तवान्? (*ii*) दुष्टबुद्धिः किं पश्यति?

(III) भाषिककार्यम्–

(*i*) 'शीघ्रम्' इति अर्थे किं पदं प्रयुक्तम्?

(क) शनैः (ख) तीव्रम् (ग) झटिति (घ) मन्दम्

(*ii*) 'इच्छन्' इति पदे का मूलधातुः?

(क) इष् (ख) इषन् (ग) इच्छ् (घ) इच्छा

(*iii*) 'तयोः' इति सर्वनाम पदस्य प्रयोगः काभ्याम् अभवत्?

(क) प्रच्छन्नभाग्यदुष्टबुद्धिभ्याम् (ख) मित्रम् दुष्टबुद्धिभ्याम्

(ग) पत्नी दुष्टबुद्धिभ्याम् (घ) प्रच्छन्नभाग्याय भार्यायै च

(*iv*) 'भित्तौ' इति पदे का विभक्तिः?

(क) द्वितीया (ख) सप्तमी (ग) तृतीया (घ) चतुर्थी

उत्तराणि– (I) (*i*) सा। (*ii*) कलशम्।

(II) (*i*) दुष्टबुद्धिः कलशम् गृहाभ्यन्तरे स्वमित्रं सर्पेण मारयितुम् इच्छन् क्षिप्तवान्। (*ii*) दुष्टबुद्धिः एकं भयङ्करम् विषधरम् फूत्कारं कुर्वन्त पश्यति।

(III) (*i*) (ग) झटिति (*ii*) (क) इषु (*iii*) (घ) प्रच्छन्नभाग्याय भार्यायै च (*iv*) (ख) सप्तमी।

प्रश्ननिर्माणम्– (*i*) **पदद्रव्ये** अनासक्ता सा न्यवेदयत्।

(*ii*) तन्मध्यतः **कलशं** गृहाभ्यन्तरे क्षिप्तवान्।

(*iii*) तदा एकं **भयङ्करं** विषधरंदुष्टबुद्धिः अपश्यत्।

(*iv*) **सः** अश्वत्थमूलं खनित्वा तं सुवर्णकलशं प्राप्तवान्।

उत्तराणि–(*i*) कस्मिन् / कुत्र (*ii*) कम् (*iii*) कीदृशम् (*iv*) कः।

9. विचित्रा खलु दैवगतिः। पतितात् कलशाद् बहिः निर्गत्य विषधरः तमेव दुष्टबुद्धिं दष्टवान्। कलशपातशब्देन प्रबुद्धौ तौ दम्पती आश्चर्येण प्रचुरमणिमाणिक्यानाम् आभया भासमानं निजगृहं दृष्ट्वा परस्परम् अवलोकयन्तौ अतिष्ठताम्।

अतः उच्यते–पापिनाञ्च सदा दुःखं, सुखं वै पुण्यकर्मणाम्।
एवं स्थिरतरं ज्ञात्वा साधुवृत्तिं समाचरेत्॥3॥

हिंदी अनुवाद (Hindi Translation)

भाग्य की गति अनोखी है। गिरे हुए घड़े से बाहर निकलकर साँप ने उस दुष्टबुद्धि को ही डस लिया। घड़े के गिरने की आवाज से जागे हुए वे पति-पत्नी आश्चर्य से अत्यधिक मणियों की चमक से चमकते हुए अपने घर को देखकर आपस में देखते ही रह गए (खड़े रहे)। इसलिए कहा भी है–

पापियों को सदा दुःख और पुण्यात्माओं को सदा सुख मिलता है। इस नियम की स्थिरता को जानकर अच्छा आचरण करना चाहिए।

अन्वयः (Prose-order)

पापिनाञ्च सदा दुःखं, सुखं वै पुण्यकर्मणाम्।
एवं स्थिरतरं ज्ञात्वा साधुवृत्तिं समाचरेत्॥3॥

सदा (*i*) .... दुःखं पुण्यकर्मणां च वै (*ii*) .... एवं (*iii*) .... ज्ञात्वा (*iv*) .... समाचरेत्।

मञ्जूषा– | सुखम्, पापिनां, साधुवृत्तिं, स्थिरतरं |

उत्तराणि–(*i*) पापिनां (*ii*) सुखम् (*iii*) स्थिरतरं (*iv*) साधुवृत्तिं।

शब्दार्थाः (Word-meanings Sanskrit to Sanskrit, Hindi and English)

दैवगतिः–भाग्यस्य गतिः, भाग्य की गति (Nature of fate)। **भासमानम्**–विभासमानम्, चमकते हुए को (To shining)। **ज्ञात्वा**–अवगम्य, जानकर (After knowing)।

भावार्थः (Summary)

पापिनाञ्च सदा दुःखं, सुखं वै पुण्यकर्मणाम्।
एवं स्थिरतरं ज्ञात्वा साधुवृत्तिं समाचरेत्॥3॥
अस्य श्लोकस्य भावोऽस्ति–

अस्मिन् संसारे ईश्वरस्य व्यवस्थया (*i*) .... जनं सदैव दु:खं प्राप्नोति एवमेव पुण्यकर्मकर्तारं जनं (*ii*) .... एव प्राप्यते। इयं पूर्णनिश्चिता व्यवस्था अस्ति। अत: इदं निश्चितं (*iii*) .... ज्ञात्वा जनै: सदैव (*iv*) .... जनानाम् इव व्यवहारं कर्तव्यम्।

मञ्जूषा– नियमम्, श्रेष्ठानां, दुष्टं, सुखम्

उत्तराणि–(*i*) दुष्टं (*ii*) सुखम् (*iii*) नियमम् (*iv*) श्रेष्ठानां।

समासा: (Compounds)

विषधर: – विषम् धारयति य: स: (बहुव्रीहि:)।
दम्पती – पति: च पत्नी च (एकशेष द्वन्द्व:)
निजगृहम् – निजम् गृहम् (कर्मधारय:)।
पुण्यकर्मणाम् – पुण्यम् कर्म येषाम् तेषाम् (बहुव्रीहि:)।
दैवगति: – देवस्य गति: (षष्ठी तत्पुरुष:)।
साधुवृत्तिम् – साधूनाम् वृत्तिम् (षष्ठी तत्पुरुष:)।
कलशपातशब्देन – कलशस्य पातम् (षष्ठी तत्पुरुष:), तस्य शब्देन (षष्ठी तत्पुरुष:)।

सन्धि-विच्छेद: (Disjoin Sandhi)

पापिनाञ्च – पापिनाम् + च (परसवर्णसन्धि:)।
कलशाद् बहि: – कलशात् + बहि: (जशत्व सन्धि:)।

प्रत्यया: (Suffixes)

विचित्रा – विचित्र + टाप्।
प्रबुद्धौ – प्र + बुध् + क्त।
स्थिरतम् – स्थिर + तरप्।
अवलोकयन्तौ – अव + लोक् + शतृ।
वृत्तिम् – वृत् + क्तिन्।
निर्गत्य – निर् + गम् + ल्यप्।
दष्टवान् – दश् + क्तवतु।
भासमानम् – भास् + शानच्।
ज्ञात्वा – ज्ञै + क्त्वा।
गति: – गम् + क्तिन्।

प्रश्ना: (Questions)

(I) एकपदेन उत्तरत–

(*i*) कस्य गति: विचित्रा? (*ii*) सर्प: कम् दष्टवान्?

(II) पूर्णवाक्येन उत्तरत–

स्थिरतरम् किम् वर्तते?

(III) भाषिककार्यम्–

(*i*) 'अतिष्ठताम्' क्रियापदस्य कर्तृपदम् किम्?
(क) आश्चर्येण (ख) तौ (ग) दम्पती (घ) तौ दम्पती

(*ii*) 'विचित्रा' इति कस्य पदस्य विशेषणम्?
(क) दैवगत्या: (ख) दैवगति: (ग) खलु (घ) गति:

(*iii*) 'पति: च पत्नी च' इति स्थाने किं पदं प्रयुक्तम्?
(क) प्रबुद्धौ (ख) तौ (ग) दम्पती (घ) आश्चर्येण

(*iv*) 'निजगृहम्' इति कस्य विशेषण पदस्य विशेष्यः?

(क) आभायाः (ख) भासमानस्य

(ग) प्रचुरमणिमाणिक्यानाम् (घ) माणिक्यानाम्

(*v*) 'अधिकम्' इत्यर्थे अनुच्छेदे किं पदम् आगतम्?

(क) प्रचुर (ख) प्रचुरम् (ग) मणिमाणिक्यानाम् (घ) प्रचुरमणिमाणिक्यानाम्

उत्तराणि– (I) (*i*) दैवस्य। (*ii*) दुष्टबुद्धिम्।

(II) पापिनाम् सदा दुःखम् सुखम् च पुण्यकर्मणाम् इति स्थिरतरम् वर्तते।

(III) (*i*) (ख) तौ (*ii*) (क) दैवगत्याः (*iii*) (ग) दम्पती (*iv*) (ख) भासमानस्य (*v*) (क) प्रचुर।

प्रश्ननिर्माणम्– (*i*) **विचित्रा** खलु दैवगतिः। (*ii*) **विषधरः** दुष्टबुद्धिमेव दष्टवान्।

(*iii*) कलशपातशब्देन **तौ दम्पती** अतिष्ठताम्। (*iv*) **पापिनाम्** सदा दुःखमेव प्राप्नोति।

उत्तराणि–(*i*) कीदृशी (*ii*) कः (*iii*) कौ (*iv*) केषाम्।

पाठ्यपुस्तकस्य अभ्यासः
(अनुप्रयोगः)

1. अधोलिखितान् प्रश्नान् एकपदेन उत्तरत (मौखिक-अभ्यासार्थम्)

(क) प्रच्छन्नभाग्यः कुत्र अवसत्?

(ख) प्रच्छन्नभाग्यः कम् पापमार्गं त्यक्तुम् अकथयत्?

(ग) प्रच्छन्नभाग्यस्य पत्नी कीदृशी आसीत्?

(घ) पत्न्याः परामर्शेन सः कस्य क्षेत्रे कार्यं कर्तुं प्रारभत?

(ङ) सुवर्णपूरितः कलशः कस्य वृक्षस्य मूले स्थितः आसीत्?

(च) दुष्टबुद्धिः कलशे कम् अपश्यत्?

(छ) दुष्टबुद्धिः कलशं कस्य गृहे अपातयत्?

(ज) पतितात् कलशात् कः निस्सृतः?

(झ) सर्पः कम् दष्टवान्?

(ञ) नरः कीदृशीं वृत्तिं समाचरेत्?

उत्तराणि– (क) कर्मपुर-नगरे (ख) दुष्टबुद्धिम् (ग) बुद्धिमती (घ) कृषकस्य

(ङ) अश्वत्थस्य (च) विषधरम् (छ) प्रच्छन्नभाग्यस्य (ज) सर्पः/विषधरः

(झ) दुष्टबुद्धिम् (ञ) साधुवृत्तिम्।

2. अधोलिखितानि वाक्यानि पठित्वा स्थूलपदम् आश्रित्य प्रश्ननिर्माणं क्रियताम्–

(क) **विषादं** त्यक्त्वा उद्यमः क्रियताम्।

(ख) **जलबिन्दुनिपातेन** क्रमशः घटः पूर्यते।

(ग) कृषकस्य क्षेत्रे **श्रमं** कृत्वा स धनम् अर्जितवान्।

(घ) धैर्यम् **आपदां** तरणिः।

(ङ) नरः **साधुवृत्तिं** समाचरेत्।

(च) प्रच्छन्नभाग्यस्य गृहम् **मणीनाम्** आभया भासमानम् अभवत्।

उत्तराणि– (क) किम्/कम् (ख) केन (ग) किम् (घ) कासाम्

(ङ) काम्/किम् (च) कासाम्।

3. अधोलिखितेषु यत् कथनं शुद्धं तत् (✓) चिह्नेन अशुद्धं च (✗) इति चिह्नेन अङ्कयत–

(क) प्रच्छन्नभाग्यः धर्मपुरनाम्नि ग्रामे अवसत्। ....

(ख) दुष्टबुद्धिः प्रच्छन्नभाग्यस्य मित्रम् आसीत्। ....

(ग) कृषकस्य क्षेत्रे हलं चालयन् प्रच्छन्नभाग्यः सुवर्णकलशं दृष्टवान्। ....

(घ) सर्पं दृष्ट्वा दुष्टबुद्धिः कलशम् पुनः आवृतवान्। ....

(ङ) एकदा प्रच्छन्नभाग्यः दुष्टबुद्धिः च विद्याध्ययनाय ग्रामान्तरं प्रस्थितौ। ....

(च) प्रच्छन्नभाग्यस्य भार्या अवदत्–अलं चिन्तया, आपदां तरणिः धैर्यम्। ....

(छ) बालकाः राजपथे क्रीडन्ति स्म। ....

(ज) दुष्टबुद्धिः अचिन्तयत्, 'अनेन बालवचसा मम चक्षुषी समुन्मीलिते'। ....

उत्तराणि– (क) × (ख) ✓ (ग) × (घ) ✓ (ङ) × (च) ✓ (छ) × (ज) ×।

4. कथायाः तृतीयम् अनुच्छेदम् पठित्वा वाक्यानां पुरतः क्रमसंख्या लिख्यताम्–

(क) सखे! यदि मां मित्रस्थाने परिगणयसि तर्हि साधुजनगर्हितम् इमं पन्थानं त्यजतु भवान्। (..........................)

(ख) प्रच्छन्नभाग्यस्तु समुपजातविवेकः स्वगृहं प्रतिनिवृत्तः। (..........................)

(ग) गुरूपदेशेन इव अनेन बालवचसा मम चक्षुषी समुन्मीलिते। (..........................)

(घ) दुष्टबुद्धिस्तु तस्य सद्वचनानि तिरस्कृत्य ग्रामाभिमुखं प्राचलत्। (..........................)

(ङ) अनेन वचसा प्रतिहतान्तःकरणः प्रच्छन्नभाग्यः अचिन्तयत्, किमिदं वचनं विशेषेण माम् एव लक्ष्यीकरोति? (..........................)

(च) अद्यप्रभृति पापपथं त्यजामि इति विचिन्त्य मित्रं दुष्टबुद्धिमवदत्। (..........................)

(छ) कुमार्गम् आश्रितस्य मम कीदृशी इयं क्लेशपरम्परा। (..........................)

उत्तराणि– (क) 5, (ख) 7, (ग) 3, (घ) 6, (ङ) 1, (च) 4, (छ) 2।

5. अधोलिखितानां 'क' स्तम्भस्य वाक्यांशानां 'ख' स्तम्भस्य वाक्यांशैः सह उचितं संयोजनं क्रियताम्–

क	ख
(*i*) सखे, यदि मां मित्रस्थाने परिगणयसि तर्हि	(क) बालवचसा मम चक्षुषी समुन्मीलिते
(*ii*) जलबिन्दुनिपातेन	(ख) प्रभूतं धनम् अर्जितवान्
(*iii*) स हलकार्यं कृत्वा श्रमेण	(ग) साधुजनगर्हितं पन्थानं त्यजतु, भवान्
(*iv*) बुद्धिमती सा अवदत् अलं चिन्तया	(घ) क्रमशः पूर्यते घटः
(*v*) गुरूपदेशेन इव अनेन	(ङ) आपदां तरणिः धैर्यम्

उत्तराणि– (*i*) सखे, यदि मां मित्रस्थाने परिगणयसि तर्हि–साधुजनगहितंपन्थानं त्यजतु, भवान्।
(*ii*) जलबिन्दुनिपातेन–क्रमशः पूर्यते घटः।
(*iii*) स हलकार्यं कृत्वा श्रमेण–प्रभूतं धनम् अर्जितवान्।
(*iv*) बुद्धिमती सा अवदत् अलं चिन्तया–आपदां तरणिः धैर्यम्।
(*v*) गुरूपदेशेन इव अनेन–बालवचसा मम चक्षुषी समुन्मीलिते।

6. अधोलिखितं कथनं कः कम् कथयति–

	कः	कम्
यथा–कथमत्र नतोन्नते मार्गे क्रीडथ?	प्रच्छन्नभाग्यः दुष्टबुद्धिः च	बालकान्
1. कथं भवन्तौ सुपथं परित्यज्य कुपथेन गन्तुं प्रवृत्तौ?	....	....
2. सखे! साधुजनगर्हितम् इमं पन्थानं त्यजतु भवान्।	....	....
3. इदानीं विषादं त्यक्त्वा उद्यमः क्रियताम्।	....	....
4. अहो विचित्रः स्वप्नो मया दृष्टः।	....	....
5. नाथ! विरम अस्माद् लोभात्।	....	....

उत्तराणि–

कः	कम्
1. उद्दण्डबालकः	प्रच्छन्नभाग्यं दुष्टबुद्धिम् च
2. प्रच्छन्नभाग्यः	दुष्टबुद्धिम्
3. प्रच्छन्नभाग्यस्य पत्नी	प्रच्छन्नभाग्यम्
4. प्रच्छन्नभाग्यः	निजपत्नीम्
5. प्रच्छन्नभाग्यस्य पत्नी	प्रच्छन्नभाग्यम्

7. मञ्जूषायां कानिचित् विशेषणानि सन्ति। तानि उपयुक्तपात्रेण सह योजयत–

मञ्जूषा

बुद्धिमती, चौरः, कृतघ्नः, विद्यापराङ्मुखः, परिश्रमी, धैर्यवती, समुपजातविवेकः, लोभरहिता, लोभी, शान्तचित्तः, अनासक्ता, ईर्ष्यालुः।

पात्राणि →	**प्रच्छन्नभाग्यः**	**दुष्टबुद्धिः**	**प्रच्छन्नभाग्यस्य पत्नी**
यथा	विद्यापराङ्मुखः	चौरः	बुद्धिमती
	....	....	....
	....	....	....
	....	....	....

उत्तराणि–			
	परिश्रमी	कृतघ्नः	धैर्यवती
	समुपजातविवेकः	लोभी	लोभरहिता
	शान्तचित्तः	ईर्ष्यालुः	अनासक्ता

8. अधोदत्तानि क्त-प्रत्ययान्त-वाक्यानि क्तवतु–प्रत्ययान्तवाक्येषु परिवर्तनीयानि–

क्त-प्रत्ययान्तम्	**क्तवतु-प्रत्ययान्तम्**
यथा–प्रच्छन्नभाग्येन प्रचुरं धनम् अर्जितम्	प्रच्छन्नभाग्य: प्रचुरं धनम् अर्जितवान्
(*i*) प्रच्छन्नभाग्येन मणीनाम् आभया गृहं भासमानं दृष्टम्।	....।
(*ii*) तेन कृषकस्य शस्यक्षेत्रे हलकार्यं कृतम्।	....।
(*iii*) अद्यप्रभृति मया कुपथ: त्यक्त:।	....।

उत्तराणि– (*i*) प्रच्छन्नभाग्य: मणीनाम् आभया गृहं भासमानं दृष्टवान्।
(*ii*) स: कृषकस्य शस्यक्षेत्रे हलकार्यं कृतवान्।
(*iii*) अद्यप्रभृति अहम् कुपथम् त्यक्तवान्।

9. उदाहरणानुसारं समस्तपदै: वाक्यानि पूरयत–

यथा–(सुवर्णेन पूरितं) **सुवर्णपूरितं** कलशं प्राप्य प्रच्छन्नभाग्य: विस्मित: अभवत्।

(क) (क्लेशानां परम्परा) .... कस्य मानसं न संतापयति।
(ख) (गुरो: उपदेश:) .... शिष्यस्य कल्याणाय भवति।
(ग) (परेषां द्रव्ये) .... आसक्ति: उचिता नास्ति।
(घ) (कलशस्य पातेन) .... तस्य निद्राभङ्गम् अभवत्।
(ङ) य: नर: (विद्याया: पराङ्मुख:) .... भवति, स: लोके आदरं न लभते।
(च) (साधूनां वृत्तिम्) .... आचरेत्।
(छ) (रवे: किरणा:) .... (गृहस्य अभ्यन्तरे) .... प्रविशन्ति।

उत्तराणि– (क) क्लेशपरम्परा (ख) गुरूपदेश: (ग) परद्रव्ये (घ) कलशपातेन
(ङ) विद्यापराङ्मुख: (च) साधुवृत्तिम् (छ) रविकिरणा:, गृहाभ्यन्तरे।

10. मञ्जूषाया: समुचितपदानां चयनं कृत्वा अधोदत्तशब्दानां त्रय: पर्याया: दीयन्ताम्–

निकेतनम्	अर्थ:	चक्षु:
भुजंग:	अहि:	प्रेक्ष्य
द्रविणम्	विलोक्य	वित्तम्
परित्यज्य	लोचनम्	विषधर:
अक्षि	निशा	सदनम्
वीक्ष्य	हित्वा	रजनी
शर्वरी	गेहम्	विहाय

(*i*) रात्रि: ....
(*ii*) धनम् ....
(*iii*) सर्प: ....
(*iv*) दृष्ट्वा ....
(*v*) नेत्रम् ....
(*vi*) त्यक्त्वा ....
(*vii*) गृहम् ....

उत्तराणि–

(*i*) रात्रि:	शर्वरी	निशा	रजनी
(*ii*) धनम्	द्रविणम्	अर्थ:	वित्तम्
(*iii*) सर्प:	भुजंग:	अहि:	विषधर:
(*iv*) दृष्ट्वा	वीक्ष्य	विलोक्य	प्रेक्ष्य
(*v*) नेत्रम्	अक्षि	लोचनम्	चक्षु:
(*vi*) त्यक्त्वा	परित्यज्य	हित्वा	विहाय
(*vii*) गृहम्	निकेतनम्	गेहम्	सदनम्

11. अधोदत्तेषु वाक्येषु कोष्ठके दत्तधातुभि: सह ल्यप् प्रत्ययं संयोज्य रिक्तस्थानपूर्ति: क्रियताम्

यथा– क्रीडत: बालकान् (प्र + ईक्ष्)–तौ वदत:।
क्रीडत: बालकान् **प्रेक्ष्य** तौ वदत:।

(क) अहं कुपथं (परि + त्यज्) .... सुपथं ग्रहीष्यामि।
(ख) अकस्मात् धनं (प्र + आप्) .... प्रच्छन्नभाग्य: विस्मित: अभवत्।
(ग) कलशं पुन: (आ + वृत्) .... दुष्टबुद्धि: मित्रस्य गृहं गत:।
(घ) स भार्यायै सर्वं वृत्तान्तं (नि + विद्) .... उच्चै: क्रन्दनम् अकरोत्।
(ङ) चौर: तस्य गृहे सन्धिं (प्र + कल्प्) .... कलशं क्षिप्तवान्।
(च) सर्प: कलशात् (निर् + गम्) .... दुष्टबुद्धिम् अदशत्।
(छ) सद्वचनानि (तिरस् + कृ) .... क: सुखी भवति?
(ज) प्रच्छन्नभाग्य: बालवचसा प्रेरणाम् (आ + दा) .... सन्मार्गे प्रवृत्त:।

उत्तराणि– (क) परित्यज्य (ख) प्राप्य (ग) आवृत्य (घ) निवेद्य
(ङ) प्रकल्प्य (च) निर्गत्य (छ) तिरस्कृत्य (ज) आदाय।

योग्यता-विस्तारः
(न परीक्षाकृते)

(क) सन्दर्भः

'साधुवृत्तिं समाचरेत्'–पाठः संस्कृतशिक्षामञ्जरीतः (द्वितीयभागात्) सङ्कलितः अस्ति। अस्याः लेखकः श्री जीवानन्द-विद्यासागरभट्टाचार्यः संस्कृतभाषायाः विशिष्टः विद्वान् आसीत्।

लेखकस्य प्रमुखः रचनाः सन्ति–

काव्यप्रकाशटीका, साहित्यदर्पणटीका, मृच्छकटिकटीका, संस्कृतशिक्षामञ्जरी।

हिंदी अनुवाद (Hindi Translation)–यह पाठ संस्कृतशिक्षामंजरी के द्वितीय भाग से संकलित है। इसके लेखक श्री जीवानन्द विद्यासागर संस्कृत भाषा के विशिष्ट विद्वान थे।

लेखक की प्रमुख रचनाएँ हैं–

काव्यप्रकाशटीका, साहित्यदर्पणटीका, मृच्छकटिकटीका, संस्कृतशिक्षामंजरी।

(ख) भावविस्तारः

अधोलिखितसूक्तयः पठ्यन्ताम्

1. सुहृदां हितकामानां यः शृणोति न भाषितम्।
   विपत् सन्निहिता तस्य, स नरः शत्रुनन्दनः।।
2. शुभेन पुरुषार्थेन शुभमासाद्यते फलम्।
   अशुभेनाशुभं राम! यथेच्छसि तथा कुरु।।
3. शुभाशुभाभ्यां मार्गाभ्यां वहन्ती वासना सरित्।
   पौरुषेण प्रयत्नेन योजनीया शुभे पथि।।
4. आरंभेतैव कर्माणि श्रान्तः श्रान्तः पुनः पुनः।
   कर्माण्यारभमाणं हि पुरुषं श्रीः निषेवते।।
5. किं कुलेन विशालेन विद्याहीनस्य देहिनः।
   विद्यावान् पूज्यते लोके नाविद्यः परिपूज्यते।।
6. दुर्जनस्य हि सङ्गेन सुजनोऽपि विनश्यति।
   प्रसन्नमपि पानीयं कर्दमैः कलुषीकृतम्।।
7. मैत्रीं सखिः कुर्यात् स्नेहं सत्सु तु सर्वथा।
   संसर्गं साधुभिः कुर्यादसत्सङ्गं परित्यजेत्।।

हिंदी अनुवाद (Hindi Translation)–निम्नलिखित सूक्तियाँ पढ़िए–

1. जो मनुष्य हित चाहने की दृष्टि से कहे गए मित्रों के वचनों को नहीं सुनता। विपत्तियाँ उसके समीप रहती हैं, वह मनुष्य शत्रुओं को आनंद प्रदान करता है।

2. शुभ कर्मों में परिश्रम से शुभ परिणाम प्राप्त होता है तथा अशुभ कर्मों में परिश्रम से अशुभ परिणाम प्राप्त होता है। अतः हे राम! तुम जो चाहते हो वही करो।

3. शुभ व अशुभ मार्गों से होकर बहने वाली वासनारूपी नदी को प्रयत्नपूर्वक शुभ मार्ग में जोड़ना चाहिए।

4. जो व्यक्ति बार-बार थकने पर भी बार-बार कार्य करता है। कार्यों को आरम्भ करने वाले उस व्यक्ति को ही लक्ष्मी प्राप्त होती है।

5. अनपढ़ व्यक्ति के विशाल कुल से भी क्या लाभ? क्योंकि संसार में तो विद्वान व्यक्ति की ही पूजा होती है, अनपढ़ व्यक्ति नहीं पूजा जाता।

6. दुर्जन के साथ रहने से सज्जन भी नष्ट हो जाता है। स्वच्छ जल भी कीचड़ के द्वारा काला कर दिया जाता है।

7. सज्जनों के साथ मित्रता करनी चाहिए। सज्जनों पर ही स्नेह करना चाहिए। सज्जनों के साथ ही मेल करना चाहिए। दुर्जनों का साथ त्याग देना चाहिए।

(ग) भाषाविस्तारः

I. अस्ति-कथायाः आरम्भे समागतम् 'अस्ति'–(पदम्) भूतकालस्य द्योतकं भवति। यथा–

1. अस्ति पाटलिपुत्रे महिलारोप्यं नाम नगरम्।
2. अस्ति कर्मपुरनाम्नि नगरे कश्चित् प्रच्छन्नभाग्यः नाम कुमारः।
3. अस्ति धारानगर्यां भोजो नाम भूपालः।
4. अस्ति वाराणस्यां वसुदत्त नाम श्रेष्ठी।

एषु वाक्येषु 'अस्ति' पदस्य 'आसीत्' अर्थः अस्ति।

हिंदी अनुवाद (Hindi Translation)–कथा के प्रारम्भ में आया हुआ 'अस्ति' शब्द भूतकाल का द्योतक होता है। जैसे–

1. पाटलिपुत्र नामक नगर में महिलारोप्य नाम का नगर था।
2. कर्मपुर नामक नगर में कोई प्रच्छन्नभाग्य नामक व्यक्ति था।
3. धारानगरी में भोज नाम का राजा था।
4. वाराणसी में वसुदत्त नाम का सेठ था।

इन वाक्यों में 'अस्ति' शब्द का अर्थ 'आसीत्' है।

II. अपि-वाक्यस्य आरम्भे 'अपि शब्दः प्रश्नवाचकः भवति। यथा–

1. अपि गृहे सर्वं कुशलम्?
2. अपि त्वं रामायणम् अपठः?
3. अपि त्वया सर्वेषां प्रश्नानाम् उत्तरं दत्तम्?

एषु वाक्येषु 'किं' पदस्य अर्थे 'अपि' पदं प्रयुक्तम् अस्ति।

हिंदी अनुवाद (Hindi Translation)–कथा के प्रारम्भ में आया हुआ 'अस्ति' शब्द भूतकाल का द्योतक होता है। जैसे–

1. क्या घर में सब कुशल हैं?
2. क्या तुमने रामायण पढ़ ली है?
3. क्या तुमने सारे प्रश्नों के उत्तर दे दिए हैं?

इन वाक्यों में 'क्या' अर्थ के लिए 'अपि' शब्द का प्रयोग हुआ है।

III. च्वि प्रत्ययः

च्विप्रत्ययः अभूततद्भावार्थकः भवति, अर्थात् यद् वस्तु पूर्वं तस्मिन् रूपे नासीत्, किन्तु सम्प्रति परिवर्तितं रूपं धारयति, तस्य बोधाय च्विप्रत्ययः प्रयुज्यते।

एष प्रत्ययः कृ - भू - अस् धातूनाम् एव योगे भवति। प्रक्रियायां प्रत्ययः लुप्तः भवति। पूर्वपदस्य अन्तिमः अकारः आकारः वा ईकाररूपं गृह्णाति। पूर्वपदस्य अन्ते यदि अन्ये स्वराः भवन्ति ते दीर्घाः जायन्ते।

उदाहरणानि

अकृष्णः कृष्णः क्रियते = कृष्णीक्रियते।

(कृष्ण + च्वि + क्रियते = कृष्ण + ई + क्रियते = कृष्णीक्रियते)

अपटुः	पटुः	भवति	–	पटूभवति
अश्यामः	श्यामः	भवति	–	श्यामीभवति
अलक्ष्यं	लक्ष्यं	करोति	–	लक्ष्यीकरोति
अश्वेतं	श्वेतं	करोति	–	श्वेतीकरोति

हिंदी अनुवाद (Hindi Translation)–च्वि प्रत्यय

कोई वस्तु जो पहले उस रूप में नहीं थी अब उस परिवर्तित रूप में आ गई है इसका ज्ञान करवाने के लिए च्वि प्रत्यय का प्रयोग किया जाता है।

यह प्रत्यय कृ, भू, अस् इन धातुओं के ही योग में प्रयुक्त होता है। च्वि प्रत्यय का प्रयोग होने पर पूर्वपद के अन्तिम 'अ' के स्थान पर 'ई' होता है।

उदाहरणानि–

अकृष्ण: कृष्ण: क्रियते = कृष्णीक्रियते।

जो काला नहीं था, उसे काला कर दिया जाता है।

(कृष्ण + च्वि + क्रियते = कृष्ण + ई + क्रियते = कृष्णीक्रियते)

अपटु:	पटु:	भवति	=	पटूभवति (जो चतुर नहीं था, वह चतुर बन जाता है)
अश्याम:	श्याम:	भवति	=	श्यामीभवति (जो काला नहीं था, वह काला हो जाता है)
अलक्ष्यं	लक्ष्यं	करोति	=	लक्ष्यीकरोति (जो लक्षित नहीं था, उसे लक्षित करता है)
अश्वेतं	श्वेतं	करोति	=	श्वेतीकरोति (जो सफेद नहीं था, उसे सफेद करता है)।

परीक्षोपयोगी अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तराणि

1. अधोलिखितं गद्यांशं पठित्वा प्रश्नान् उत्तरत– 5

(अ) अथ पूर्वमित्रं दुष्टबुद्धि: प्रच्छन्नभाग्यस्य धनागमवृत्तान्तं श्रुत्वा कदाचित् मध्यरात्रे तस्य एव गृहे चौर्यार्थं सन्धि-खननसुयोगम् विलोकयन् स्थित:। तस्मिन्नेव काले सुप्तोत्थित: प्रच्छन्नभाग्य: सम्भ्रान्तचित्त: स्वपत्नीं सम्बोध्य उवाच–अहो विचित्र: स्वप्नो मया दृष्ट:। अस्माकं क्षेत्रे अश्वत्थतरुमूले सुवर्णपूरित: कलश: विद्यते इति। तच्छ्रुत्वा परद्रव्ये अनासक्ता सा न्यवेदयत्–नाथ! विरम अस्माद् लोभात्।

दुष्टबुद्धि: तु तयो: वार्ताम् श्रुत्वा झटिति एव क्षेत्रं गत:। तत्र अश्वत्थमूलं खनित्वा तं सुवर्णकलशं प्राप्तवान्। यदा स तस्य आवरणम् अपसारयति तदैव भयङ्करम् एकं विषधरं फूत्कारं कुर्वन्तं पश्यति। भीत: स कलशं पुन: आवृत्य तम् च आदाय मित्रस्य गृहं समागत:। स्वमित्रं सर्पेण मारयितुम् इच्छन् स: भित्तौ सन्धिं प्रकल्प्य तन्मध्यत: कलशं गृहाभ्यन्तरे क्षिप्तवान्।

(I) एकपदेन उत्तरत– ½ × 4 = 2

(*i*) दुष्टबुद्धि: कस्य गृहम् चौर्यार्थम् आगच्छत्?

(*ii*) सुवर्णपूरित: कलश: कस्य वृक्षस्य मूले आसीत्?

(*iii*) दुष्टबुद्धि: सुवर्ण कलशे किम् अपश्यत्?

(*iv*) प्रच्छन्नबुद्धि: कां स्वस्वप्नम् अश्रावयत्?

(II) पूर्णवाक्येन उत्तरत– 1 × 1 = 1

दुष्टबुद्धि: सुवर्णकलशं गृहाभ्यन्तरे किमर्थं क्षिप्तवान्?

(III) भाषिककार्यम्– ¼ × 4 = 2

(*i*) 'नाथ! विरम अस्मात् लोभात्' इति कथनं का कथयति?

(क) प्रच्छन्नभाग्य: (ख) पत्नी (ग) प्रच्छन्नभाग्यस्य पत्नी (घ) चौर:

(*ii*) 'भीत: स: कलशं पुन: आवृत्य मित्रस्य गृहम् आगत:' अस्मिन् वाक्ये 'स:' इति पदं कस्मै प्रयुक्तम्?

(क) दुष्टबुद्धये (ख) प्रच्छन्न भाग्याय (ग) मित्राय (घ) बालकाय

(*iii*) 'सुप्तोत्थित: प्रच्छन्नभाग्य:' अत्र किं पदं विशेषणपदम्?

(क) प्रच्छन्नभाग्य: (ख) प्रच्छन्न: (ग) सुप्तोत्थित: (घ) उत्थित:

(*iv*) अनुच्छेदे 'क्षिप्तवान्' इति क्रियापदस्य कर्तृपदं किम्?

(क) भित्तौ (ख) सन्धिं (ग) कलशं (घ) स:

उत्तराणि– I. (*i*) प्रच्छन्नभाग्यस्य (*ii*) अश्वत्थवृक्षस्य (*iii*) विषधरम् (*iv*) स्वपत्नीम्

II. स्वमित्रं सर्पेण मारयितुम् इच्छन् स: सुवर्णकलशं गृहाभ्यन्तरे क्षिप्तवान्।

III. (*i*) (ग) प्रच्छन्नभाग्यस्य पत्नी (*ii*) (क) दुष्टबुद्धये (*iii*) (ग) सुप्तोत्थित: (*iv*) (घ) स:

(आ) अथ व्रजन्तौ तौ गर्तसंकुले मार्गे क्रीडत: कांश्चित् बालकान् प्रेक्ष्य अवदताम्–भो भो बालका:। कथम् अत्र नतोन्नते विषमे मार्गे क्रीडथ? यदि कश्चिद् गर्ते पतेत् तर्हि स: विकलाङ्गो भूत्वा चिरं क्लेशम् अनुभवेत्। तच्छ्रुत्वा तेषु कश्चित् उद्दण्ड: बालक: उवाच–'अयि भो' यद्येवं तर्हि कथं भवन्तौ सुपथं परित्यज्य अनेन कुपथेन गन्तुं प्रवृत्तौ? अपि इदं श्रेयस्करम्?

अनेन वचसा प्रतिहतान्त:करण प्रच्छन्नभाग्य: अचिन्तयत्–किम् इदम् वचनं विशेषेण मामेव लक्ष्यीकरोति? अहो! कुमार्गम् आश्रितस्य मम कीदृशीयं क्लेशपरम्परा। गुरूपदेशेन इव अनेन बालवचसा मम चक्षुषी समुन्मीलिते। अद्य प्रभृति पापपथं त्यजामि इति विचिन्त्य मित्रं दुष्टबुद्धिम् अवदत् 'सखे! यदि माम् मित्रस्थाने परिगणयसि, तर्हि साधुजनगर्हितम् इमं पन्थानं त्यजतु भवान्।'

(I) एकपदेन उत्तरत– ½ × 2 = 1

(*i*) मार्गे व्रजन्तौ तौ क्रीडत: कान् अपश्यताम्?

(*ii*) प्रच्छन्नभाग्य: दुष्टबुद्धिं कीदृशं मार्गम् त्यक्तुम् अकथयत्?

(II) पूर्णवाक्येन उत्तरत– 1 × 2 = 2

(*i*) कस्य वचनं श्रुत्वा प्रच्छन्नभाग्य: प्रतिहतान्त:करण: अभवत्?

(*ii*) प्रच्छन्नभाग्यस्य चक्षुषी केन उन्मीलिते?

(III) भाषिककार्यम्– ½ × 4 = 2

(*i*) अहो कुमार्गमाश्रितस्य मम कीदृशीयं क्लेशपरम्परा। अत्र 'मम' सर्वनामपदं कस्मै प्रयुक्तम्?

(क) दुष्टबुद्धये (ख) चौराय (ग) मित्राय (घ) प्रच्छन्नभाग्याय

(*ii*) 'कथं भवन्तौ सुपथं परित्यज्य कुपथेन गन्तुम् प्रवृत्तौ' अस्मिन् वाक्ये कर्तृपदं किम्?

(क) भवन्तौ (ख) कथं (ग) सुपथं (घ) गन्तुम्

(*iii*) 'अङ्गहीन:' अस्य पदस्य क: पर्याय: अनुच्छेदे आगत:?

(क) उद्दण्ड: (ख) विकलाङ्ग: (ग) क्लेशम् (घ) प्रतिहतान्त:करण:

(*iv*) अनुच्छेदे 'कुपथम्' इत्यस्य पदस्य क: विपर्यय: लिखित: वर्तते?

(क) चिरम् (ख) क्लेशम् (ग) सुपथम् (घ) दुष्पथम्

उत्तराणि– I. (*i*) बालकान् (*ii*) साधुजनगर्हितम्

II. (*i*) उद्दण्डबालकस्य वचनं श्रुत्वा प्रच्छन्नभाग्य: प्रतिहतान्त:करण: अभवत्।

(*ii*) बालवचसा प्रच्छन्नभाग्यस्य चक्षुषी उन्मीलिते।

III. (*i*) (घ) प्रच्छन्नभाग्याय (*ii*) (क) भवन्तौ (*iii*) (ख) विकलाङ्ग: (*iv*) (ग) सुपथम्

2. घटनाक्रमानुसारं अधोलिखितानि पदानि पुनर्लिखत– **½ × 8 = 4**

(अ) (*i*) मार्गे कस्यचित् बालकस्य वचनानि श्रुत्वा प्रच्छन्नभाग्यस्य चक्षुषी उन्मीलिते।
(*ii*) तस्य मित्रं दुष्टबुद्धिः एकदा तस्य गृहे चौर्यार्थम् आगच्छत्।
(*iii*) सर्पेण मित्रम् मारयितुम् दुष्टबुद्धिः कलशं गृहाभ्यन्तरे क्षिप्तवान्।
(*iv*) स च पापपथं त्यक्त्वा गृहमागतः, क्षेत्रे च हलकार्यम् कर्तुम् आरभत।
(*v*) कलशाद् बहिः निर्गत्य विषधरः दुष्टबुद्धिम् एव दष्टवान्।
(*vi*) कलशपातशब्देन प्रबुद्धौ दम्पती परस्परम् अवलोकयन्तौ आश्चर्यचकितौ जातौ।
(*vii*) प्रच्छन्नभाग्यः स्वमित्रेण दुष्टबुद्धिना सह धनहरणार्थं ग्रामान्तरं गतः।
(*viii*) स अश्वत्थमूलं खनित्वा विषधरयुक्तं सुवर्णकलशं प्राप्तवान्।

उत्तराणि– (*i*) प्रच्छन्नभाग्यः स्वमित्रेण दुष्टबुद्धिना सह धनहरणार्थं ग्रामान्तरं गतः।
(*ii*) मार्गे कस्यचित् बालकस्य वचनानि श्रुत्वा प्रच्छन्नभाग्यस्य चक्षुषी उन्मीलिते।
(*iii*) स च पापपथं त्यक्त्वा गृहमागतः, क्षेत्रे च हलकार्यम् कर्तुम् आरभत।
(*iv*) तस्य मित्रं दुष्टबुद्धिः एकदा तस्य गृहे चौर्यार्थम् आगच्छत्।
(*v*) स अश्वत्थमूलं खनित्वा विषधरयुक्तं सुवर्णकलशं प्राप्तवान्।
(*vi*) सर्पेण मित्रम् मारयितुम् दुष्टबुद्धिः कलशं गृहाभ्यन्तरे क्षिप्तवान्।
(*vii*) कलशाद् बहिः निर्गत्य विषधरः दुष्टबुद्धिम् एव दष्टवान्।
(*viii*) कलशपातशब्देन प्रबुद्धौ दम्पती परस्परम् अवलोकयन्तौ आश्चर्यचकितौ जातौ।

(आ) (*i*) मार्गे उद्दण्डबालकस्य वचांसि श्रुत्वा प्रच्छन्नभाग्यः चौरकर्म त्यक्तवान्।
(*ii*) प्रच्छन्नभाग्यः दुष्टबुद्धिः च द्वे मित्रे आस्ताम्।
(*iii*) दुष्टबुद्धिः तस्य गेहे चौरकर्म कर्तुम् आगच्छत्।
(*iv*) तौ धनहरणार्थं ग्रामान्तरं गतौ।
(*v*) सः कृषकस्य क्षेत्रे हलकार्यं कर्तुम् आरभत।
(*vi*) सर्पः बहिः निर्गत्य दुष्टबुद्धिमेव दृष्टवान्।
(*vii*) स्वप्नस्य वार्तां श्रुत्वा सः क्षेत्रात् सविषधरं कलशं प्राप्तवान्।
(*viii*) मित्रं मारयितुं तत् कलशं सः मित्रस्य गृहे अक्षिपत्।

उत्तराणि– (*i*) प्रच्छन्नभाग्यः दुष्टबुद्धिः च द्वे मित्रे आस्ताम्।
(*ii*) तौ धनहरणार्थं ग्रामान्तरं गतौ।
(*iii*) मार्गे उद्दण्डबालकस्य वचांसि श्रुत्वा प्रच्छन्नभाग्यः चौरकर्म त्यक्तवान्।
(*iv*) सः कृषकस्य क्षेत्रे हलकार्यं कर्तुम् आरभत।
(*v*) दुष्टबुद्धिः तस्य गेहे चौरकर्म कर्तुम् आगच्छत्।
(*vi*) स्वप्नस्य वार्तां श्रुत्वा सः क्षेत्रात् सविषधरं कलशं प्राप्तवान्।
(*vii*) मित्रं मारयितुं तत् कलशं सः मित्रस्य गृहे अक्षिपत्।
(*viii*) सर्पः बहिः निर्गत्य दुष्टबुद्धिमेव दष्टवान्।

3. अधोलिखिता पङ्क्तिषु स्थूलक्षरपदानां प्रसङ्गानुसारं शुद्धं अर्थं चित्वा लिखत– **1 × 4 = 4**

(*i*) आपदां **तरणिः** धैर्यम्
(क) तारकाः (ख) सूर्यः (ग) नौका (घ) तारिका

(*ii*) **अश्वत्थमूले** सुवर्णपूरितः कलशः विद्यते।
(क) पिप्पलवृक्षमूले (ख) अश्वे स्थितः (ग) आगामिदिवसे (घ) अश्वपदमूले

(*iii*) व्यसनं प्राप्य यो मोहात् केवलं **परिदेवयेत्।**
(क) परितः भासयेत् (ख) प्रसन्नः भवेत् (ग) विलापं कुर्यात् (घ) प्रसन्नताकुर्यात्

(*iv*) **नाथ!** विरम अस्मात् लोभात्।
(क) आभूषण विशेष (ख) स्वामि (ग) सेवकः (घ) स्वामिनः

उत्तराणि–(*i*) (ग) नौका (*ii*) (क) पिप्पलवृक्षमूले (*iii*) (ग) विलापं कुर्यात् (*iv*) (ख) स्वामि

4. अधोलिखितकथनेषु रेखाङ्कितानि पदानि आधृत्य उदाहरणानुसारं प्रश्ननिर्माणं कुरुत। **1 × 4 = 4**

(*i*) दुष्टबुद्धिः कलशे <u>विषधरम्</u> अपश्यत्।
(क) कम् (ख) किम् (ग) काम् (घ) कान्

(*ii*) <u>जलबिन्दुनिपातेन</u> क्रमशः पूर्यते घटः।
(क) कथम् (ख) कस्मै (ग) केन (घ) कस्यै

(*iii*) धैर्यम् <u>आपदां</u> तरणिः।
(क) केषाम् (ख) कान् (ग) काम् (घ) कासाम्

(*iv*) <u>दुष्टबुद्धिः</u> झटिति क्षेत्रं गतवान्।
(क) का (ख) कः (ग) केन (घ) कस्मै

उत्तराणि–(*i*) (क) कम्? (*ii*) (ग) केन? (*iii*) (घ) कासाम्? (*iv*) (ख) कः?

5. अधोलिखितं गद्यांशं पठित्वा प्रश्नान् उत्तरपुस्तिकायाम् उत्तरत– **5**

दुष्टबुद्धिः तु तयोः वार्ताम् श्रुत्वा झटिति एव क्षेत्रं गतः। तत्र अश्वत्थमूलं च खनित्वा तं सुवर्णकलशं प्राप्तवान्। यदा स तस्य आवरणम् अपसारयति तदा भयङ्करम् एकं विषधरं फूत्कारं कुर्वन्तं पश्यति। भीतः सः कलशं पुनः आवृत्य तं च आदाय मित्रस्य गृहं समागतः स्वमित्रं सर्पेण इच्छन् स भित्तौ सन्धिं प्रकल्प्य तन्मध्यतः कलशं गृहाभ्यन्तरे क्षिप्तवान्। विचित्रा खलु दैवगतिः पतितात् कलशात् बहिः निर्गत्य विषधरः तमेव दुष्टबुद्धिं दष्टवान्। कलश-पात-शब्देन प्रबद्धौ तौ दम्पती आश्चर्येण प्रचुर-मणि-माणिक्यानाम् आभया भासमानं निजगृहं दृष्ट्वा परस्परम् अवलोकयन्तौ अतिष्ठताम्।

(I) एकपदेन उत्तराणि उत्तरपुस्तिकायां लिखत– **½ × 4 = 2**

(*i*) दैवगति: कीदृशी खलु?

(*ii*) अश्वत्थमूलं खनित्वा दुष्टबुद्धि: किं प्राप्तवान्।

(*iii*) विषधर: कं दष्टवान्?

(*iv*) कं मारयितुम् इच्छन् दुष्टबुद्धि: कलशं गृहाभ्यन्तरे अक्षिपत्?

(II) पूर्णवाक्येन उत्तरत– **1 × 1 = 1**

प्रबद्धौ तौ दम्पती आश्चर्येण किम् अपश्यताम्?

(III) निर्देशानुसारम् उत्तरत– **½ × 4 = 2**

(*i*) ''स: भितौ सन्धिं प्रकल्प्य'' अत्र 'स:' इति सर्वनामपदं कस्मै प्रयुक्तम्?

(क) प्रच्छन्नभाग्याय (ख) चौराय (ग) दुष्टबुद्धये (घ) मित्राय

(*ii*) 'भयङ्करं विषधरम्' अत्र विशेषणपदं किम्?

(क) भयङ्करं (ख) विषधरम् (ग) विषधर: (घ) भयङ्कर:

(*iii*) 'शीघ्रम्' अस्य पर्यायपदं गद्यांशात् चित्वा लिखत–

(क) एव (ख) श्रुत्वा (ग) झटिति (घ) गत:

(*iv*) ''स: कलशं गृहाभ्यन्तरे क्षिप्तवान्'' अत्र क्रियापदं किम्?

(क) कलशं (ख) क्षिप्तवान् (ग) स: (घ) गृहाभ्यन्तरे

उत्तराणि– I. (*i*) विचित्रा (*ii*) सुवर्णकलशम् (*iii*) दुष्टबुद्धिम् (*iv*) स्वमित्रम्

II. प्रबुद्धौ तौ दम्पती आश्चर्येण प्रचुर-मणि-माणिक्यानाम् आभया भासमानं निजगृहम् अपश्यताम्।

III. (*i*) (ग) दुष्टबुद्धये (*ii*) (क) भयङ्करं (*iii*) (ग) झटिति (*iv*) (ख) क्षिप्तवान्

6. 'क' वर्गस्य पदानां 'ख' वर्गस्य पदेषु अर्थान् चित्वा लिखत– **5**

'क'	'ख'
(*i*) दैव	(क) सर्प:
(*ii*) श्रुत्वा	(ख) आकर्ण्य
(*iii*) व्यसनम्	(ग) शीघ्रम्
(*iv*) कलश:	(घ) भाग्य
(*v*) प्रचुरम्	(ङ) नौका
(*vi*) अश्वत्थ	(च) घट:
(*vii*) विषधर:	(छ) दु:खम्
(*viii*) झटिति	(ज) अधिकम्
(*ix*) तरणि:	(झ) पिप्पल

उत्तराणि– (*i*) (घ) भाग्य (*ii*) (ख) आकर्ण्य (*iii*) (घ) दु:खम् (*iv*) (च) घट: (*v*) (ज) अधिकम् (*vi*) (झ) पिप्पल (*vii*) (क) सर्प: (*viii*) (ग) शीघ्रम् (*ix*) (ङ) नौका

मूल्यपरक प्रश्ना: (VBQs)

वाक्यानि पठित्वा वाक्याधारितान् प्रश्नाम् उत्तरत–

प्रश्ना: (*i*) 'साधुवृत्तिं समाचरेत्' इति शीर्षके कस्या: आचरणं प्रति प्रेरितम् अस्ति?

(*ii*) 'भो, भो बालका:! कथमत्र नतोन्नते विषमे मार्गे क्रीडथ?' इति वाक्ये कीदृशे मार्गे क्रीडितव्यम्, इत्यस्य प्रेरणा प्रदत्ता?

(*iii*) 'अहो! कुमार्गम् आश्रितस्य मम कीदृशी इयं क्लेशपरम्परा? इति वाक्ये क्लेशपरम्पराया: कारणं कीदृशो मार्ग: कथित:?

(*iv*) 'आपदां तरणि: धैर्यम्।' आपद: क: / किम् पारं नयति, इति अस्मिन् वाक्ये लिखितम्?

(*v*) 'जलबिन्दुनिवातेन क्रमश: पूर्यते घट:।' अत्र वाक्ये कस्य सन्देश: दत्त: वर्तते?

उत्तराणि– (*i*) साधुवृत्ते: (*ii*) सुमार्गे (*iii*) कुमार्ग: (*iv*) धैर्यम् (*v*) निरन्तरं परिश्रमस्य